डॉ. गोपाल राय
और
हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

डॉ० गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

सह-संपादक
डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

प्रतिभा प्रकाशन

ISBN : 978-81-941225-8-6
प्रथम संस्करण
2020

सर्वाधिकार ©
संपादकाधीन

प्रकाशक
प्रतिभा प्रकाशन
केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिस के पास)
मुजफ्फरपुर-842001
फोन : 9955658474, 9572980709

अक्षर-संयोजन
अमित कुमार कर्ण

आवरण
शशिकांत सिंह

मुद्रक
जी० एस० ऑफसेट, दिल्ली

मूल्य
350.00 (तीन सौ पचास रुपये)

Dr. Gopal Rai Aur Hindi Kathalochana

Rs. 350.00

अनुक्रम

संपादकीय —7

धरोहर :

भाषा चिन्तन : शुद्ध भाषा की खोज — **गोपाल राय** —13

स्मृति-शेष बंधुवर — **निर्मला जैन** —22

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी: डॉ० गोपाल राय — **हरदयाल** —27

समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास का इतिहास — **मैनेजर पाण्डेय** —34

विद्धांग–बद्ध-कोदण्ड-मुष्टि–खर रुधिर-स्राव — **सत्यकाम** —41

उपन्यास की संरचना : संदर्भ-प्रेमचंद के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना — **डॉ. पूनम सिन्हा** —54

हिन्दी कहानी का इतिहास-2 साहित्य भी इतिहास भी — **डॉ. पूनम सिन्हा** —65

इतिहासकार गोपाल राय — **अमिता पाण्डेय** —71

आलेख :

कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और डॉ० गोपाल राय — **डॉ. रेवती रमण** —77

डॉ० गोपाल राय की कथालोचना — **डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह** —81

नलिनविलोचन शर्मा एवं गोपाल राय की साहित्यदृष्टि : संदर्भ-गोदान — **डॉ. सुधा बाला** —85

हिन्दी उपन्यासालोचन के हिमालय : डॉ० गोपाल राय — **डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय** —93

गोपाल राय की सृजनात्मकता: कथालोचना की विस्तृत भूमि — **डॉ. संजय पंकज** —98

हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और डॉ० गोपाल राय — **डॉ. त्रिविक्रम ना.सिंह** —102

उपन्यास की संरचना और डॉ० गोपाल राय — **डॉ. रामेश्वर द्विवेदी** —109

गोपाल राय : एक दृष्टि **डॉ. राजीव कुमार झा**–116
शेखर : एक जीवनी और गोपाल राय की विवेचना **डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय**–121
मैला आँचल की आंचलिकता:
डॉ० गोपाल राय **डॉ. कल्याण कुमार झा** –133
उपन्यास आलोचना की परंपरा और गोपाल राय **डॉ. संत साह** –137
मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की
पहचान : डॉ० गोपाल राय **डॉ. साक्षी शालिनी** –140
साहित्येतिहास-लेखन की कठिनाइयाँ और
डॉ० गोपाल राय **डॉ. राकेश रंजन** –144
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल में
स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति **डॉ. सुशांत कुमार** –153
डॉ० गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना
का अनुशीलन **डॉ. संध्या पाण्डेय** –157
आंचलिक उपन्यास की अवधारणा और गोपाल राय **डॉ. चित्तरंजन कुमार** –163
उपन्यास शिल्प और गोपाल राय का विवेचन **सोनल** –170
गोदान की आलोचना प्रक्रिया और कथालोचक
गोपाल राय **अखिलेश कुमार** –176
हिन्दी उपन्यासालोचन और डॉ० गोपाल राय **डॉ. माधव कुमार** –180
कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय **डॉ. पल्लवी** –185
डॉ० गोपाल राय : समीक्षा और साहित्याब्दकोश **समीक्षा सुरभि** –188
कथालोचक डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में
विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ **डॉ. प्रीति कुमारी** –200
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की
भाषागत विशिष्टता **डॉ. इंदिरा कुमारी** –205
हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय **पल्लवी कुमारी** –211
उपन्यास की पहचान मैला आँचल के संबंध
में गोपाल राय की विवेचना **डॉ. अंशु कुमारी** –216
हिन्दी कहानी का इतिहास और डॉ० गोपाल राय **विकास कुमार** –220

संस्मरण :

मैं और गोपाल राय **उषाकिरण खान** –225
इतिहासकार-कोशकार डॉ० गोपाल राय :

एक संक्षिप्त परिचय	**भगवानदास मोरवाल**	–227
सुखद स्मृतियों में गोपाल राय	**डॉ. श्रीनारायण प्रसाद सिंह**	–232

साक्षात्कार :

डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार (समीक्षा से साभार)	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–236
प्रो. सत्यकाम का साक्षात्कार :	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–243
डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय	**डॉ. सुनीता गुप्ता**	–258
डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय	**डॉ. पूनम सिन्हा** **डॉ. माधव कुमार**	–263
अरुणकमल का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय	**विनीता कुमारी**	–268
प्रतिवेदन		–271

डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार
(समीक्षा से साभार)

हिन्दी उपन्यास एवं कहानी के इतिहास-लेखक एवं आलोचक के रूप में विख्यात डॉ० गोपाल राय से भेंट-वार्ता की इच्छा बहुत दिनों से थी। 2009 के अक्टूबर में दिल्ली जाना हुआ तो यह सुयोग प्राप्त हुआ। मैंने डॉ० राय के बड़े पुत्र डॉ० सत्यकाम से दूरभाष पर अपनी इच्छा प्रकट की, सत्यकाम जी ने अपनी सहमति व्यक्त करते हुए डॉ० राय से पूछकर साक्षात्कार के लिए तिथि एवं समय निर्धारित कर दिया। 'समीक्षा' पत्रिका का दायित्व अब सत्यकाम जी पर है, जिसे वे बखूबी निभा रहे हैं।

मैं 28 अक्टूबर की शाम में अपने परिवारजनों के साथ उनके इग्नू-परिसर स्थित आवास पर गई। क्योंकि डॉ० गोपाल राय जिस आत्मीयता एवं स्नेह-भाव से मिले, उससे मैं सहज हो गई। अतिथि कक्ष में सब लोग गप-शप कर रहे थे। पटना के डॉ० तरुण कुमार भी अपने परिवार के साथ आए हुए थे। डॉ० सत्यकाम की पत्नी सीमा जी मुझे डॉ० गोपाल राय के कमरे में ही ले गईं। चारों तरफ किताबें थीं। सीमा जी ने हँसते हुए कहा, 'बाबूजी का कमरा तो मैं ठीक-ठाक कर देती हूँ, किताबें नहीं छूती हूँ; इध र-उधर हो जाने पर बाबूजी नाराज हो जाते हैं।

डॉ० गोपाल राय से विभिन्न विषयों पर देर तक संवाद हुआ। इसी बीच मेरे छोटे पुत्र नीलाभ ने हमारी तस्वीर भी उतारी। बीच-बीच में हमारी अनौपचारिक बातें भी होती रहीं, जिनसे पता चला कि परिवार में उन्होंने कभी निस्संगता महसूस नहीं की। उनका पारिवारिक परिवेश हमें भी सहज एवं सुखद लगा—कहीं भी महानगरीय जीवन की कृत्रिमता का आभास तक नहीं था। यहाँ तक कि जिस आवास में वे रह रहे थे, वह भी प्रकृति के खुले वातावरण में अवस्थित था। आवास के सामने सड़क थी, सड़क से लगे हुए दूर तक पेड़-पौधे थे, जो अपनी अकृत्रिमता एवं अनगढ़ता में आँखों को अपनत्व प्रदान कर रहे थे। पारिवारिक परिवेश एवं आस-पास के पर्यावरण

का प्रभाव भी तो लेखक पर पड़ता है। बहरहाल, दिल्ली जैसे महानगर में एक छत के नीचे, एक दूसरे से जुड़कर तीन पीढ़ियों को एक साथ रहते देखकर अच्छा लगा—जीवन के प्रति आस्था मजबूत हुई कि आज भी हमारे भारतीय परिवार में बहुत कुछ अच्छा बचा हुआ है।

जब तक डॉ० राय से मैंने साक्षात्कार लिया, सीमा जी ने सभी लोगों के खाने की तैयारी पूर कर ली थी। दिल्ली जैसे महानगर में सामान्यत: इतना आतिथ्य कहाँ मिलता है। कुछ जगहें ऐसी होती हैं, जहाँ जाने का मन बार-बार होता है, कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनसे मिलने का मन बार-बार होता है।

डॉ० राय के लिए लेखन-कार्य हमेशा मिशन की तरह रहा है। उन्होंने शब्दों की जो साधना की है, उससे हिन्दी-संसार समृद्ध हुआ है। उम्र के इस पड़ाव पर भी लेखन के प्रति ऐसा समायोजन एवं समर्पण स्पृहणीय है। हम उनके लंबे एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं।

डॉ० गोपाल राय वरिष्ठ आलोचक एवं 'समीक्षा' पत्रिका के संस्थापक-संपादक हैं। यूँ तो इनकी कई महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक कृतियाँ हैं, किन्तु 2002 में प्रकाशित इनका 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास' अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इनका 1950 तक की हिन्दी कहानियों का इतिहास 2008 में प्रकाशित हो चुका है। इन दिनों वे 1951 से 1975 तक की हिन्दी कहानियों का इतिहास-लेखन कर रहे हैं।

पूनम सिन्हा : आपने वर्षों अध्यापन कार्य किया है। तब और आज के शैक्षिक माहौल के बदलाव को आप किस रूप में देखते हैं?

गोपाल राय : मैं पटना विश्वविद्यालय में शिक्षक था। मैं अध्यापन कार्य से 1992 के अंत में मुक्त हुआ। इधर के वर्षों में अध्यापन का जो माहौल है, वह दूसरों से सुना हुआ है। अपने अध्यापन-काल में मैंने देखा है कि 1965 के बाद अध्यापन का माहौल बदलता गया। निरंतर गतिरोध एवं ह्रास आता गया। 1957 से 1965 तक मैं कॉलेज में था। उस समय आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, प्रोफेसर नलिन विलोचन शर्मा, प्रोफेसर जगन्नाथ राय शर्मा थे। वे पढ़ाते भी थे, शोध भी करते थे। छात्रों को पढ़ाने के लिए वे गहन अध्ययन करते थे। वही परंपरा मुझे मिली। बहुत मेहनत से छात्रों को पढ़ाया, उसे लिखकर सामग्री के रूप में संग्रहीत किया। उपन्यास एवं भाषा वगैरह पर मेरी जो किताबें हैं, वे उसी अध्यापन का प्रतिफल हैं। अध्यापन के क्रम में जो पढ़ा, वह लेखन के काम में आया, लेकिन 1965 विशेषकर 70 के

बाद जब छात्र आंदोलन सामने आया तो पठन-पाठन एवं परीक्षाओं में धांधलियाँ बढ़ीं। क्रमश: अवसान होता गया। फिर भी 1990 तक एक स्तर बना रहा। उसके बाद की स्थिति बहुत खराब रही, ऐसा सुना है। आश्चर्य एवं क्षोभ होता है, इन दिनों की शिक्षा की स्थिति को देख-सुनकर। यह विचार करने वाला कोई नहीं है कि शैक्षिक ढाँचे का पतन हो रहा है। दिल्ली में बहुत से अध्यापकों के वर्ग में छात्र जाते ही नहीं। यहाँ के शोध प्रबंध की स्थिति भी दयनीय है। रीवा का एक शोध-प्रबंध इतना घटिया था कि मैं उसके पक्ष में संस्तुति नहीं दे पाया। अत: मुझे उसका पारिश्रमिक नहीं मिला, बाद में शोधार्थी को डॉक्टरेट की डिग्री मिल गई।

पूनम सिन्हा : आपके लेखन या संपादन ने आपके पारिवारिक जीवन में व्यवधान भी उत्पन्न किया?

गोपाल राय : मेरे पारिवारिक जीवन और लेखन में कभी द्वंद्व उत्पन्न नहीं हुआ। मेरी पत्नी गृहिणी थीं एवं गृह-प्रबंध में उनको मुझसे कोई अपेक्षा नहीं थी। मैं उन्हें पैसे देकर निश्चिंत हो जाता था। मैं हमेशा से पढ़ने-लिखने में बहुत श्रम करता रहा, मुझे व्यवधान नहीं मिला। छात्र-जीवन से अध्यापक-जीवन तक मैं कठोर श्रम करता था। शोध-कार्य के संदर्भ में नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी एवं इलाहाबाद में कार्य करता रहा। शोध-सामग्री लेकर आया। उस अवधि में पत्नी मायके में रहीं। शोध का विषय था, 'हिन्दी कथा-साहित्य और उसके विकास पर पाठकों की रुचि का प्रभाव'। संचित सामग्री का उपयोग मैंने 'हिन्दी उपन्यास कोश' में भी किया।

बाद में पत्नी अस्वस्थ रहने लगीं तो उनको लेकर पारिवारिक व्यस्तता बढ़ी। बच्चों पर भी ध्यान देना था, बावजूद इसके पठन-पाठन एवं लेखन बाधित नहीं हुआ, क्योंकि आर्थिक पक्ष पर कभी ध्यान नहीं दिया; मसलन घर बनाना, जमीन खरीदना आदि। मेरे लेखन की सफलता में मेरी पत्नी का सहयोग है। बाद में तीनों बहुओं के कारण गृह-कार्य से मुक्त हुआ। वे मेरा ध्यान रखती हैं। मेरा अध्ययन एवं लेखन आज भी लगातार जारी है।

पूनम सिन्हा : अपने लेखन में आपने राजनीतिक विचारधारा का दबाव किस रूप में महसूस किया?

गोपाल राय : किसी राजनीतिक दल से मैं कभी जुड़ा नहीं। हिन्दी प्रगतिवादी लेखक संघ की पटना शाखा में सदस्य एवं बाद में उपाध्यक्ष के रूप में जुड़ा। मैं सामान्य जन-जीवन से जुड़ा रहने वाला व्यक्ति हूँ। गरीब, सर्वहारा लोगों में मेरी रुचि रही है। उनकी संगति ने मुझे प्रेरित भी

किया। मैं किसी के पक्ष में नहीं लिखता। नरेन्द्र कोहली की प्रशंसा करता हूँ तो लोग दक्षिणपंथी समझते हैं। राजनैतिक विचारधारा ने कभी भी मुझे गलत ढंग से प्रभावित नहीं किया। मैं भारतीयता का समर्थक हूँ। मनुष्यता का पक्षधर हूँ। किसी दल-सम्प्रदाय से जुड़ा नहीं हूँ। मुझे वैदिक संस्कृति से लेकर आज तक की भारतीय संस्कृति पर गर्व है।

पूनम सिन्हा : लेखन और संपादन कला–इन दोनों विधाओं को साधने में आपने किन कठिनाइयों का अनुभव किया?

गोपाल राय : लिखता मैं प्रारंभ से ही था, 1953 में पहला लेख 'अवंतिका' में छपा। 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'परिषद् पत्रिका', 'सम्मेलन पत्रिका', 'हिन्दी अनुशीलन', 'हिन्दुस्तानी' में मेरे आलेख छपे। प्रारंभ में सूफी साहित्य पर लिखा, इस पर मैं पढ़ाता था। 1967 में 'समीक्षा' निकली। हिन्दी कविता, कहानी, उपन्यास वगैरह तो प्रमुखता से छप रहे थे, हिन्दी की पुस्तक-समीक्षा हाशिए पर है, इसे मैंने अनुभव किया। थोड़ी सी जगह इसे पत्रिकाओं में मिलती थी। अंग्रेजी में 'टाइम्स लिटरेरी' में इसका सम्मान था। पटना विश्वविद्यालय में रामचन्द्र प्रसाद अंग्रेजी के प्रोफेसर थे। इनसे विचार कर आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा की अगुआई में 'समीक्षा' पत्रिका निकली। मुझे संतोष है कि पुस्तक-समीक्षा आज हाशिए पर नहीं है। प्रत्येक पत्र एवं पत्रिकाओं में इसे आज जगह मिल रही है।

'समीक्षा' के संपादन ने मेरे लेखन कार्य को बाधित नहीं किया। यद्यपि किसी पत्रिका को निकालना अत्यंत दुरूह कार्य है। ग्राहक बनाना, पत्र लिखना, प्रेस वालों से संपर्क करना, कागज खरीदना, कंपोजिंग सेक्शन देखना–ये सारे कार्य संपादित करने होते थे। अपनी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रकाशन संस्थान 'ग्रंथ निकेतन' भी खोला। बाद में निर्ममता से उसे बंद किया। संपादन ने मेरे लेखन को बाधित नहीं किया, इसका प्रमाण मेरे द्वारा लिखित पुस्तकें है। शिक्षण कार्य से अवकाश प्राप्त करने के बाद मेरे लेखन में गति आई। जब मुझे लगा कि 'समीक्षा' को संपादित करने में, लिखने में बाधा आ रही है तो मैंने उसे सत्यकाम को दे दिया। संपादन ने मेरे लेखन को समृद्ध किया, बाधित नहीं। व्यवस्था से मुक्त होने के लिए मैंने 'समीक्षा' का उत्तरदायित्व सत्यकाम को दे दिया।

पूनम सिन्हा : श्री रामवृक्ष बेनीपुरी की संपादन कला ने आपको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया?

गोपाल राय : बेनीपुरी जी से मेरा कभी प्रत्यक्ष परिचय नहीं रहा।

बेनीपुरी जी एवं दिनकर जी को मैं बहुत ऊँचे स्थान पर प्रतिष्ठित पाता था। 'नईधारा' पत्रिका मैं देखता था। उस पत्रिका की छपाई, लेखन आदि तो प्रभावित करता ही था, लेकिन प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं था। नलिन जी की संपादन-कला का प्रभाव अधिक पड़ा। यह स्वाभाविक भी था। मैंने उनसे पढ़ा एवं उनके साथ पढ़ाया भी। वे 'सम्मेलन पत्रिका', 'परिषद् पत्रिका' के संपादक थे, उन्होंने मेरे आलेख भी छापे। उनकी संपादकीय टिप्पणियों को मैं पढ़ता था एवं प्रभावित भी होता था। अत: मैं कह सकता हूँ कि नलिन विलोचन जी से मैं बहुत प्रभावित हुआ।

पूनम सिन्हा : 'समीक्षा' पत्रिका के दीर्घकालीन संपादन का अनुभव कैसा रहा?

गोपाल राय : पत्रिका निकालना, किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा, जिसके पास संसाधन या पैतृक संपत्ति नहीं हो, अत्यंत कठिन काम है। ऐसी पत्रिका के लिए साधन जुटाना, जिसमें लोगों के रुचि कम हो, अत्यंत कठिन काम है। कथा-पत्रिका में लोग रुचि भी लेते हैं, समीक्षा की पत्रिका में उस समय लोगों की बहुत रुचि नहीं थी। 'समीक्षा' के लिए पैसा जुटाने के दंश को मैंने 41 सालों तक झेला। प्रूफ रीडिंग करना, पत्रिका भेजना, प्रेस को देखना, पते लिखना इन सब कामों में पूरा परिवार, पत्नी, बहू भी लगी रहीं। 'समीक्षा' के माध्यम से बहुत सारे आलोचकों का जन्म हुआ है। आलोचना के क्षेत्र में बहुत बड़े-बड़े कुछ नाम जो आज हैं, वे 'समीक्षा' से निकले हैं। 'समीक्षा' के लिए 41 वर्षों तक मैंने जो संघर्ष किया, उस पर मुझे संतोष है।

पूनम सिन्हा : इन 41 वर्षों में आलोचना के क्रमिक विकास को आप किस रूप में देखते हैं? नए आलोचक अपने आलोचना-कर्म में कितने ईमानदार एवं विश्वसनीय हैं?

गोपाल राय : 1967 के बाद आलोचना तीन रूपों में होती है—पहला शोध प्रबंध के रूप में, दूसरा स्वतंत्र आलोचना पुस्तक के रूप में, तीसरा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों एवं पुस्तक-समीक्षाओं के रूप में। 1970 के बाद सिर्फ दो ही आलोचकों डॉ० रामविलास शर्मा एवं डॉ० नामवर सिंह ने प्रमुखता पाई। कथा वगैरह में बहुत सारे नाम आए। ऐसे आलोचक थे, जिनकी चर्चा होनी चाहिए, लेकिन नहीं हुई। बहुत सारे आलोचकों को तो आलोचकों ने ही दबा दिया। साहित्य अकादमी ने अपना पुरस्कार किसी आलोचकों को नहीं दिया। डॉ० नगेन्द्र का भी सही मूल्यांकन नहीं हुआ। नंदकिशोर नवल एवं मधुरेश की चर्चा बड़े आलोचक के रूप में

होनी चाहिए थी, नहीं हुई। मार्क्सवादी विचारधारा के कारण नवल जी की भी चर्चा हुई, लेकिन उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा को अपनी आलोचना पर लादा, अतः लोगों ने उन्हें पसंद नहीं किया। हरदयाल ने भी बहुत काम किया, किन्तु आलोचना के क्षेत्र में उन्हें जो प्रसिद्धि मिलनी चाहिए, वह नहीं मिली। शोध-परक आलोचना का स्तर गिरा। स्वतंत्र पुस्तकों में आलोचना आई, लेकिन विशेष मूल्यांकन नहीं हुआ। समीक्षाओं और लेखों में व्यक्तिगत राग-द्वेष प्रकट होने लगे, खेमेबाजी होती रही, आज भी है। समालोचना की आज की भाषा अस्पष्ट, अव्यवस्थित एवं जुमलेबाजी के रूप में है। रचनाकारों ने भी आलोचकों को पछीटने का काम किया है। प्रेमशंकर अच्छे आलोचक थे, उन्हें भुला दिया गया।

नलिन जी एवं नामवर जी में अंतर है कि नलिन जी ने 'मैला आँचल' की समीक्षा लिखी तो उस रचना को गौरव मिला। नामवर जी ने 'परिंदे' की जो प्रशंसा की, उसमें अतिशयोक्ति है, नलिनजी की समीक्षा में अतिशयोक्ति नहीं है। नलिनजी ने लिखा कि हो सकता है कि रेणुजी के परवर्ती उपन्यास 'मैला आँचल' वाली ऊँचाई प्राप्त नहीं कर सके। उनका कथन सही साबित हुआ।

पूनम सिन्हा : हिन्दी साहित्य इतिहास-लेखन करके तो आपको पूर्ण संतोष मिला होगा? क्या ऐसा लगता है कि कुछ ऐसा लिखना था, जो आप अब तक लिख नहीं पाए?

गोपाल राय : हिन्दी साहित्य के इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता सबों ने महसूस की, जिम्मा भी लिया, किन्तु पूरा नहीं किया। परिस्थितियाँ अनुकूल होते ही मैंने हिन्दी साहित्य का इतिहास-लेखन शुरू किया। 2000 ई. के आस-पास मैंने सोचा कि 2012 तक मैं यह काम पूरा कर लूँगा। इसके लिए जो आधारभूत संरचना चाहिए, वह है नहीं। परिणाम यह हुआ कि मुझे ही खेत कोड़ने से लेकर फसल काटने तक का काम करना पड़ रहा है। पुस्तकों का पाठन कर उससे संबद्ध प्रामाणिकता की जाँच-पड़ताल के बाद इतिहास लेखन होता है। इतिहास-लेखन के लिए आलोचना भी समृद्ध होनी चाहिए। इतिहास-लेखक के लिए यह सब कुछ कठिन है। रचनावलियाँ हैं, कहानी संकलन हैं, उनके संपादन सही ढंग के नहीं हैं, तिथियों की गड़बड़ी है। लेखकों एवं प्रकाशकों ने धांधली मचा रखी है। अतः तथ्यों का पता करना कठिन हो जाता है। सारा काम करना पड़ता है। अभी आठ वर्षों का समय मुझे चाहिए इतिहास-लेखन के लिए।

पूनम सिन्हा : हिन्दी साहित्य एवं अन्य भाषाओं के साहित्य के इतिहास-लेखन में आप क्या साम्य या वैषम्य पाते हैं?

गोपाल राय : अंग्रेजी साहित्य के इतिहास-लेखन के लिए सामग्रियाँ प्रामाणिक रूप से उपलब्ध हैं, अत: उनका इतिहास-लेखन ज्यादा सरल है। कम्प्यूटर पर तो काम कर लेता हूँ। इंटरनेट का प्रयोग नहीं कर पाता। अन्य भाषाओं के साहित्य के इतिहास का अधिक अध्ययन नहीं होने के कारण तुलनात्मक टिप्पणी नहीं दे सकता।

पूनम सिन्हा : नए संपादक के संपादन में 'समीक्षा' के कई अंक निकल चुके हैं। इन्हें देखने के बाद क्या आप 'समीक्षा' के भविष्य के प्रति आश्वस्त हैं?

गोपाल राय : मैंने ठोक-बजाकर 'समीक्षा' को नए संपादक को सौंपा हैं। इन दो अंकों के आधार पर संतोष मिला है कि 41 साल पहले जो बिरवा मैंने लगाया, वह फलता-फूलता रहेगा।

पूनम सिन्हा : अपने लेखक-कर्म का आकलन आप किस रूप में करते हैं?

गोपाल राय : अपने लेखन कार्य से मुझे संतोष है। मैं यह सोचकर लिखता हूँ कि समकालीन एवं भविष्य के लेखकों का काम मेरा लेखन आसान बनाए। यही मेरी उपलब्धि होगी। पारिवारिक माहौल ने मुझे चैन दिया। बेटे-बहुओं के सद्व्यवहार के कारण मैं निश्चिंत मन से साहित्य-साधना कर रहा हूँ।

104, लक्ष्मीनारायण नगर,
रामकृष्ण सेवाश्रम
मुजफ्फरपुर-843116

□